

प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां
विक्रम और बेताल



MAPLE KIDS

दो पिता की कहानी

तांत्रिक को दिए हुए वचन को निभाने के लिए राजा विक्रमादित्य ने फिर से पेड़ पर चढ़कर बेताल को उतारकर कंधे पर डाल लिया और चलने लगे। बेताल ने उन्हें नई कहानी सुनानी शुरू कर दी।

बहुत पहले अवन्तीपुर में एक ब्राह्मण रहता था। प्रसव के समय, एक सुन्दर पुत्री को जन्म देकर, ब्राह्मण की पत्नी चल बसी। ब्राह्मण अपनी पुत्री से बहुत प्यार करता था। पुत्री को प्रसन्न रखने के लिए वह उसकी हर छोटी-बड़ी इच्छा पूरी करता था। इसके लिए उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। धीरे-धीरे ब्राह्मण की पुत्री विशाखा बड़ी होकर एक सुंदर तथा होशियार युवती बन गई।

एक दिन विशाखा सोई हुई थी, तभी एक चोर खुली खिड़की से अंदर आया और परदे के पीछे छुप गया। विशाखा उसे देखकर डर गई और पूछा, "तुम कौन हो?" उसने कहा, "मैं चोर हूँ। राजा के सिपाही मेरे पीछे पड़े हुए हैं। कृपया मेरी मदद कीजिए। मैं आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा।"

तभी राजा के सिपाहियों ने दरवाजे पर दस्तक दी। विशाखा ने उन्हें कुछ नहीं बताया और वे वापस चले गए। चोर बाहर निकला, विशाखा का धन्यवाद कर, जिस रास्ते आया था उसी रास्ते से चला गया।

विशाखा और उस चोर की मुलाकात अक्सर बाजार में होने लगी और धीरे-धीरे उनमें प्यार हो गया। एक चोर से विशाखा का विवाह करने के लिए उसके पिता कभी राजी नहीं होते, इसलिए दोनों ने चुपचाप विवाह कर लिया।

थोड़े दिनों तक सुखपूर्वक दिन बीत गए। एक दिन राजा के सिपाहियों ने चोर को पकड़ लिया और उसे एक अमीर के घर में डाका डालने के जुर्म में मृत्युदंड मिला। गर्भवती विशाखा विक्षिप्त होकर रोने लगी। चोर की मृत्यु के बाद विशाखा के पिता ने समझा-बुझाकर उसका विवाह एक दूसरे व्यक्ति से कर दिया। कुछ माह के बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसे उसके पति ने अपने बच्चे के रूप में स्वीकार किया।



उनका जीवन सुखपूर्वक चल रहा था, पर दुर्भाग्यवश पांच साल के बाद विशाखा की मृत्यु हो गई। पिता ने पुत्र का लालन-पालन बहुत लाड़-प्यार से किया। पिता-पुत्र में बहुत प्रेम था। धीरे-धीरे बच्चा बड़ा होकर दयालु और सहृदय युवक बन गया। अचानक एक दिन

उसके पिता की भी मृत्यु हो गई।

दुःखी पुत्र अपने माता-पिता की शांति की प्रार्थना करने नदी के किनारे गया। पानी में जाकर जल अंजुली में भरकर जब उसने प्रार्थना की तो तीन हाथ जल से बाहर निकले। एक चड़ियों वाले हाथ ने कहा, “पुत्र, मैं तुम्हारी मां हूँ।” युवक ने मां को तर्पण दिया। दूसरे हाथ ने कहा, “मैं तुम्हारा पिता हूँ।” तीसरा हाथ शांत रहा। आप कौन हैं, पूछने पर उसने कहा, “पुत्र मैं भी तुम्हारा पिता हूँ। मैंने ही तुम्हें लाड़-प्यार से पाल-पोसकर बड़ा किया है।”

बेताल ने राजा से पूछा, “राजन्! दोनों में से किस पिता के लिए पुत्र को तर्पण करना चाहिए?” विक्रमादित्य ने कहा, “जिसने उसका लालन-पालन और किया। पिता के सभी कार्यों का पालन उसी ने किया है। मां की मृत्यु के बाद यदि बच्चे का ख्याल पिता ने नहीं रखा होता, तो शायद उसकी भी मृत्यु हो जाती। वही उस युवक का पिता कहलाने का अधिकारी है।”

बेताल ने ठंडी आह भरी। फिर से विक्रमादित्य ने सही उत्तर दिया था। बेताल विक्रमादित्य के कंधे से उड़ा और वापस पेड़ पर चला गया।